PART-**1**

पुनर्जागरण काल के भूगोलवेत्ता:- बर्नहार्ड वारेनियस

भाग-1

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल

सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा

पुनर्जागरण काल के भूगोलवेत्ता (Geographers of Renaissance Period)

6.बर्नहार्ड वारेनियस (Bernhard Varenius)

सत्रहवीं शताब्दी के महान भूगोलवेत्ता वारेनियस (1622-1650 ई०) का जन्म हेम्बर्ग के समीप एल्ब नदी के तट पर स्थित हिजेकर नगर में हुआ था। उन्होंने हेम्बर्ग विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र भौतिकी, गणित और जीव विज्ञान में शिक्षा प्राप्त की थी। शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात वारेनियस ने ऐम्सटरडम नगर के एक परिवार में प्राइवेट शिक्षक के रूप में तीन वर्ष (1647-50) तक कार्य किया। ऐम्सटरडम एक व्यस्त व्यापारिक केन्द्र था जहाँ से व्यापारी दूरंवत्ती प्रदेशों दक्षिण-पूर्व एशिया, जापान और प्रशांत महासागरीय द्वीपों तक व्यापार के उद्देश्य से जाया आया करते थे। डच व्यापारी अपने व्यापार

क्षेत्रों की भौगोलिक दशाओं, उनके उत्पादन व्यापारिक वस्तुओं, नगरों, पत्तनों, समाजों तथा उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक दशाओं आदि के तिषय में जानने के लिए आतुर रहते थे। इसका वारेनियस पर बड़ा प्रभाव पड़ा और भौगोलिक अध्ययन में उसकी रुचि बढ़ने लगी। इसी के परिणामस्वरूप वारेनियस ने 1644 में **'जापान और स्याम का भौगोलिक वर्णन'** (Description Regni Japoniae et Siam) नामक पुस्तक प्रकाशित किया।